2 मीराबाई

कवयित्री : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1498 ई०।
- **जन्म-स्थान**—चौकड़ी (मेवाड़), राजस्थान।
- **पिता**—रत्नसिंह।
- **पति**—भोजराज।
- **मृत्यु**—सन् 1546 ई०।
- **भाषा**—ब्रजभाषा।

जीवन-परिचय—जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी की प्रपौत्री, जोधपुर नरेश राजा रत्नसिंह की पुत्री और भगवान् कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीराबाई का जन्म राजस्थान के चौकड़ी नामक ग्राम में सन् 1498 ई० में हुआ था। बचपन में ही माता का निधन हो जाने के कारण ये अपने पितामह राव दूदा जी के पास रहती थीं और प्रारम्भिक शिक्षा भी उन्हीं के पास रहकर प्राप्त की थीं। राव दूदा जी बड़े ही धार्मिक एवं उदार प्रवृत्ति के थे, जिनका प्रभाव मीरा के जीवन पर पूर्णरूपेण पड़ा था। आठ वर्ष की मीरा ने कब श्रीकृष्ण को पति रूप में स्वीकार लिया, यह बात कोई नहीं जान सका। इनका विवाह चित्तौड़ के महाराजा राणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के कुछ वर्ष बाद ही मीरा विधवा हो गयीं। अब तो इनका सारा समय श्रीकृष्ण-भक्ति में ही बीतने लगा। मीरा श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम मानकर उनके विरह में पद गातीं और साधु-सन्तों के साथ कीर्त्तन एवं नृत्य करतीं। इनके इस प्रकार के व्यवहार ने परिवार के लोगों को रुष्ट कर दिया और उन्होंने मीरा की हत्या करने का कई बार असफल प्रयास किया। अन्त में राणा के दुर्व्यवहार से दुःखी होकर मीरा वृन्दावन चली गयीं। मीरा की कीर्ति से प्रभावित होकर राणा ने अपनी भूल पर पश्चाताप किया और इन्हें वापस बुलाने के लिए कई सन्देश भेजे; परन्तु मीरा सदा के लिए सांसारिक बन्धनों को छोड़ चुकी थीं। कहा जाता है कि मीरा एक पद की पंक्ति 'हरि तुम हरो जन की पीर' गाते-गाते भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गयी थीं। मीरा की मृत्यु द्वारका में सन् 1546 ई० के आस-पास हुई थी।

साहित्यिक सेवाएँ—मीरा के काव्य का मुख्य स्वर कृष्ण-भक्ति है। इनके काव्य में इनके हृदय की सरलता तथा निश्छलता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। इनकी भक्ति-साधना ही इनकी काव्य-साधना है। दाम्पत्य-प्रेम के रूप में व्यक्त इनके सम्पूर्ण काव्य में, इनके हृदय के मधुर भाव गीत बनकर बाहर उमड़ पड़े हैं। विरह की स्थिति में इनके वेदनापूर्ण गीत अत्यन्त हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। इनका प्रत्येक पद सच्चे प्रेम की पीर से परिपूर्ण है। भाव-विभोर होकर गाये गये तथा प्रेम एवं भक्ति से ओत-प्रोत इनके गीत; आज भी तन्मय होकर गाये जाते हैं। कृष्ण के प्रति प्रेमभाव की व्यञ्जना ही इनकी कविता का उद्देश्य रहा है।

रचनाएँ—मीरा की रचनाओं में इनके हृदय की विह्वलता देखने को मिलती है। इनके नाम से सात-आठ रचनाओं के उल्लेख मिलते हैं—(1) नरसी जी का मायरा, (2) राग गोविन्द, (3) गीत गोविन्द की टीका, (4) राग-सोरठ के पद, (5) मीराबाई की मलार, (6) गरबा गीत, (7) राग विहाग तथा फुटकर पद। इनकी प्रसिद्धि का आधार 'मीरा पदावली' एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

भाषा-शैली—मीरा ने ब्रजभाषा को अपनाकर अपने गीतों की रचना की। इनके द्वारा प्रयुक्त इस भाषा पर राजस्थानी, गुजराती एवं पंजाबी भाषा की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। इनकी काव्य-भाषा अत्यन्त मधुर, सरस और प्रभावपूर्ण है। इनके सभी पद गेय हैं। इन्होंने गीतिकाव्य की भावपूर्ण शैली अथवा मुक्तक शैली को अपनाया है। इनकी शैली में हृदय की तन्मयता, लयात्मकता एवं संगीतात्मकता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। ♦

पदावली

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुण तिलक दिये भाल।।
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर बैजंती-माल।।
छुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल।।1।।

पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम-जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।2।।

माई री मैं तो लियो गोविन्दो मोल।
कोई कहै छाने कोई कहे चुपके, लियो री बजन्ता ढोल।।
कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल।।
याही कूँ सब जाणत हैं, लियो री आँखी खोल।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्यौ, पूरब जनम कौ कौल।।3।।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक-लाज तजि नाँची।।
गयी कुमति लई साधु की संगति, भगत रूप भई साँची।
गाय-गाय हरि के गुण निसदिन, काल ब्याल सूँ बाँची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्री गिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।।4।।

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई।।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गयी, आणंद फल होई।।
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई।।5।।

('मीरा सुधा-सिन्धु' से)

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पदों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(अ) बसो मेरे नैनन····· भक्त बछल गोपाल।

(ब) माई री मैं·····जनम कौ कौल।

(स) पायो जी····· जस गायो।

(द) मैं तो साँवरे····· रसीली जाँची।

(य) मेरे तो गिरधर गोपाल·····तारो अब मोई।

2. मीराबाई का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा मीराबाई का जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा मीरा की रचनाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा ने संसार की तुलना किससे की है और क्यों?

2. गिरधर के घर जाने को मीराबाई क्यों कहती हैं?

3. *'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई'* से क्या तात्पर्य है?

4. धर्म के अन्तर्गत केवल बाहरी कर्मकाण्ड करने से क्या होता है?

5. मीरा के काव्य में व्यक्त रहस्यवाद का परिचय दीजिए।

6. कृष्ण के क्रय करने के सम्बन्ध में मीराबाई क्या कहती हैं?

7. मीरा ने संसार की तुलना किस खेल से की है और क्यों?

8. मीरा को कौन-सा धन प्राप्त हो गया है और उसकी क्या विशेषताएँ हैं?

9. मीरा ने संसार-सागर से पार होने का क्या उपाय बताया है?

10. मीरा भगवान् के किस रूप को अपने नयनों में बसाना चाहती हैं?

11. शरीर पर गर्व न करने का उपदेश मीरा ने क्यों दिया है?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

2. मीरा ने किस भाषा में रचना की है?

3. मीरा ने प्रेम की लता को किस प्रकार पल्लवित किया?

4. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—

(अ) मीरा भगवान् के सगुण रूप की उपासिका थीं। ( )

(ब) मीरा के अनुसार शरीर पर गर्व करना चाहिए। ( )

(स) मीराबाई श्रीकृष्ण को पति-रूप में मानती हुई उनके घर जाना चाहती हैं। ( )

(द) मीराबाई रत्नसिंह की पुत्री थीं। ( )

5. मीरा ने क्या मोल लिया है?

6. मीरा ईश्वर के किस रूप की उपासिका थीं?

7. मीरा किस भक्ति-शाखा की कवयित्री हैं?

8. मीरा किसके रंग में रँगी हैं?

9. मीरा के काव्य का मुख्य स्वर क्या है?

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—

(अ) बसो मेरे नैनन में नंदलाल।

(ब) काल ब्याल सूँ बाँची।

(स) मोर मुकुट मकराकृत कुंडल।

2. निम्नलिखित पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए— दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई।

3. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए— भगति, सबद, नैना, बिसाल, किरपा, आणंद, अँसुवन।

● आन्तरिक मूल्यांकन

मीराबाई का जो पद आपको बहुत प्रभावित किया हो, उस पद को कंठस्थ कीजिए।

♦